।। धिन धिनताको अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| राम नाम लो, भाग जगाओ || राम

।। धिन धिनताको अंग ।।

।। साखी ।।

धिन धिन ता को जन्म हे ।। ज्यांहा पद खोजो आय ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। रहया राम लिव लाय ।।१।।

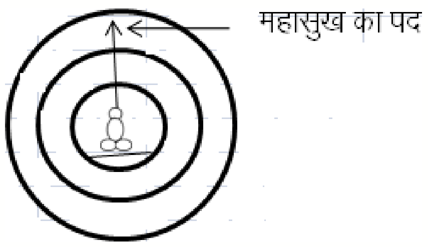

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जिसने काल के परेका महासुख का पद खोजा व घटमे प्रगट किया उसका मनुष्य देह का जन्म पाना धन्य है धन्य है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जो नर–नारी ब्रम्हा विष्णु महादेव शक्ती कुटुंम्ब परिवार धन,राजसे मोह तोड्कर सभी देवताओका देव जो सतस्वरुप राम है उससे लिव लगाते है वे सभी स्त्री–पुरुष धन्य है धन्य है ।।।१।।

धिन ग्यानी धिन सन्त वे ।। धिन ज्या चीन्हा राम ।।
धिन जनम सुखराम क्हे ।। जीवत पोथा धाम ।।२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जगतमे ग्यानी संत अनेक है परंन्तु जिन ग्यानी व संतोने आदिसे सभी देवताओका देव ऐसा जो राम है उसे पहचाना है वे धन्य है । वैसे ही उस राम का स्मरण कर जितेजी काळ रहित महासुखके निजधाम को पहुँचे है उनका जगत मे मनुष्य जन्म लेना धन्य है धन्य है ।।।२।।

धिन धिन सुण सोइं मन्ड मे ।। ज्हां मथ काढयो सार ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। लेवे तत बिचार ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि संसार मे जिन नर नारीयोने सभी धर्मोका सभी पंथोका तथा सभी ग्यान ध्यान का मंथन करके रसना से रामनाम रटकर काल को सहजमे मारते आता यह सार खोजा है वे सभी नर नारी धन्य है धन्य है । व जो नर नारी रामनाम इस सार शब्द को ग्रहण करते है व ग्रहण कर कालको मारते है वे सभी नर नारी धन्य है धन्य है ।।।३।।

धिन धिन सो संसार मे ।। जिण घट ब्रम्ह गिनान ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। दिये भ्रम सब भांज ।।४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतस्वरुप ब्रम्हग्यान जिस नर–नारीके घटमे प्रगट है वे धन्य है । त्रिगुणी मायाके सुख सदा व तृप्त है इस भ्रममे अटक गये थे परंन्तु सतस्वरुप विज्ञान खोजने पे तीन लोकके सभी सुख अतृप्त है व झुठे है तथा सतस्वरुपके सुख सत्य है तृप्त है यह समज जाते है व समजने पे त्रिगुणी मायाकी विधीयाँ त्यागकर सतस्वरुप की विधी धारण करते है वे सभी ग्यानी,नर नारी धन्य है धन्य है ।।।४।।

धिन धिन सो संसार मे ।। ज्यां शिर सत्तगुर होय ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। तत कण लीयो जोय ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,संसारमे अनेक नर नारी ग्यानी,ध्यानी है परंन्तु जिसने अपने सिरपर आवागमन से मुक्त करा देनेवाले सतगुरु धारण किये है वे धन्य है धन्य है । तथा ऐसे सतगुरु से भेद धारण कर तत्त कण याने सदा सुख देणेवाला सतस्वरुप ब्रम्ह को घटमे प्रगट करा चुके है वे धन्य है धन्य है ।।।५।।

धिन धिन ज्यां कूं गुर मिल्या ।। सत्तगुर समरथ आय ।।
आतम मे सुखराम क्हे ।। दिन्हा ब्रम्ह बताय ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जिसे जिसे कालके दु:खसे सदा के लिये मुक्त करा देणेवाले सतगुरु मिले है वे धन्य है धन्य है ऐसे सतगुरुके शरणमे जाने से शिष्य के आत्मामे ही सतस्वरुप ब्रम्ह प्रगट हो जाता है । ऐसे जिस जिस नर-नारी,ग्यानी ध्यानीयोने सतगुरुका शरणा धारण कर आत्मामे ही परमात्मा ब्रम्ह प्रगट किया है वे सभी धन्य है धन्य है। ।।६।।

धिन धिन निर्गुण ओळख्यो ।। ईण काया के मांय ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। उलट गिगन घर जाय ।।७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ब्रम्ह,विष्णु महादेव,शक्ती ये सगुणी देवता जिस निरगुण रामजीकी भक्ती करते है ऐसे रामजी को जिसने जिसने अपने काया मे प्रगट किया है वे सभी धन्य है धन्य है । तथा सतगुरु का शरणा धारण कर अपने ही काया मे स्वर्ग के रास्ते से उलटकर स्वर्गादिकके परे गिगन मे जाकर घर किया है वे सभी नर-नारी धन्य है धन्य है । ।।७।।

धिन धिन सो नर धिन्न हे ।। ज्या रे जन को लाड ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। मुख रसणां लिव गाढ ।।८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिन्हे काल से मुक्त करा देणेवाले सतगुरु से भाव व प्रित आती है वे सभी नर-नारी ग्यानी ध्यानी धन्य है धन्य है । आगे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जो नर-नारी ग्यानी ध्यानी मुख से याने रसनासे गाढी लिव लगाकर रामनाम का स्मरण करते है वे सभी धन्य है धन्य है ।।।८।।

धिन धिन सो संसार मे ।। ज्यां घट दया संतोष ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। दे जीवा दिल पोष ।।९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि परदु:ख,परकष्ट,देखकर उन जिवोको कष्ट से मुक्त करनेकी जिनके घटमे दया आती है वे सभी नर नारी धन्य है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,परमात्मा ने सुख दु:ख मे जैसे भी रखा है उसमे संतोष है ऐसे नर नारी धन्य है धन्य है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि

जो नर–नारी मन मे किसी कारण से घबरा गये है ऐसे घबराये हुये जीव को भय रहित करके थिर देते है वे सभी नर–नारी धन्य है धन्य है ।।।९।।

धिन धिन सो नर धिन्न हे ।। सो गुण ग्राही होय ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। झूट न बोले कोय ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो नर नारी परदु:ख देणेवाले अपने अवगुण त्यागते है व परसुख देणेवाले दुजोके गुण धारण करते है वे सभी नर–नारी धन्य है धन्य है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो नर नारी सदा सत्य बोलते है व दु:खसे विवश होने पर भी झुठ जरासाभी नही बोलते वे नर नारी धन्य है धन्य है ।।।१०।।

धिन धिन से नर जाणीये ।। ज्यां घट हर भे होय ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। आसा रखे न कोय ।।११।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिस नर–नारी के घटमे सदा हरका डर रहता है वे नर नारी धन्य है धन्य है तथा जो हर के सिवा अन्य देवी–देवता तथा नर–नारी से किसी भी प्रकारकी सुख पाने की तथा दु:ख मिटनेकी आशा नही रखते वे सभी नर नारी धन्य है धन्य है ।।।११।।

धिन धिन सो नर धिन्न हे ।। ज्यां जाण्यो जुग झूठ ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। रहे कर्मा सू रूठ ।।१२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिसने जिसने इस जगत के माया मोहके सुखोको झुठा समजकर त्यागा है व मायाके ग्यान ध्यान कर्म काण्डोसे रुठकर सतस्वरुप का ग्यान धारण किया है वे नर–नारी धन्य है धन्य है ।।।१२।।

धिन धिन ता को जनम हे ।। सन्त सरावे आय ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। दुर्बल पूजे जाय ।।१३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो सतस्वरुपी संन्तोको सराहते है ऐसे नर नारीयों का जगतमे मनुष्य देह धारण करना धन्य है धन्य है । तथा सतपे चलनेवाले जगतके दु:खीत पिडीत नर–नारी को स्वयंम् के बलसे जितना ज्यादा से ज्यादा बनता उतना सुख पहुँचाते है वे नर–नारी धन्य है धन्य है ।।।१३।।

धिन धिन जनम संसार मे ।। हर गुण सुं माता ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। निज पद का दाता ।।१४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,संसारमे जो जो हरीके गुणमे मस्त रहते है तथा जिवोको मोह ममता के भ्रमसे निकालकर निर्मल सुखोका निजपद देते है वे नर नारी धन्य है धन्य है ।।।१४।।

धिन धिन सो नर धिन्न हे ।। ज्यां उर अणभे होय ।।

सब गेला सुखराम क्हे || बरण बतावे जोय ||१५||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिस नर–नारीके उरमे अणभय देशका अनुभव है वे नर नारी धन्य है धन्य है । तथा जो नर नारी अणभय देशमे पहुँचने के पश्चिम रास्ते का तथा रास्ते मे आनेवाले हर रोडे का क्या उपाय है इसकी भांती भांतीसे विधी बताते है वे धन्य है धन्य है ।||१५||

भरम करम निर्णो करे || काढे अर्थ बिचार ||
धिन सोई सुखराम क्हे || बोहो नर उधरे लार ||१६||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो संत शिष्यके हर मर्मका तथा हर कर्मकाण्ड के दु:ख के परिणाम का सतस्वरुप ग्यान से सुक्ष्म से सुक्ष्म निर्णय शिष्य को समाजाता है वह संत धन्य है धन्य है । उस संतके बलसे अनंत नर नारीका उध्दार होता है ।||१६||

धिन जो दे उपदेस वो || धिन जो झेले आय ||
धिन धिन सो सुखराम क्हे || निज पद रहया समाय ||१७||

जो जो संत सतस्वरुप देश का उपदेश देते है वे सभी धन्य है धन्य है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे सतस्वरुप संत का उपदेश जो नर नारी धारण करते है वे नर–नारी कालके दु:ख के परे के महासुख के निजपद मे सदा के लिये समाते है ऐसे सभी संत धन्य है धन्य है ।||१७||

भक्त करे सो धिन हे || ऊँच निच के माय ||
बिन भक्ति सुखराम क्हे || सब ही ध्रक कहाय ||१८||

जो नर नारी चाहे उत्तम आचार के घरमे जन्मे हो,या निच आचार के घरमे जन्मे हो परन्तु काल से मुक्त होकर महासुख के पदमे पहुँचाने वाली सतस्वरुप विग्यान की भक्ती करते है वे धन्य है धन्य है । जो सतस्वरुप भक्ती छोडकर अन्य भक्ती करते है वे सभी चाहे उत्तम आचार के घरमे जन्मे हो या निच आचार के घरमे जन्मे हो काल का ग्रास बनते है इसलिये उनका मनुष्य जन्म धारण करना धिक्कार है धिक्कार है ।||१८||

सो राजा सुन धिन्न हे || न्याव करे तत्त जोय ||
फिर धिन सो सुखराम क्हे || दयावंत जो होय ||१९||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते कि,जो राजा प्रजा के हर दु:खपर विचार कर प्रजा को हर प्रकार का सुख पहुँचाने का न्याय करता है तथा अपने राज के हर प्राणी मात्रा के दु:ख को समजकर सुख पहुँचाने की अपने उर मे दया रखता है ऐसा राजा दयावंत होता है । इसलीये वह राज्या धन्य है धन्य है ।||१९||

हाकम सोई धिन्न हे || सूंक न मान्डे हात ||
फिर धिन सो सुखराम क्हे || मिथ्या करे न बात ||२०||

हाकम याने न्यायाधिश वह धन्य है जो न्याय करनेमे दुध का दुध व पानी का पानी अलग अलग कर न्याय करता है । न्याय में जरासाभी झुठ की खोट होने नही देता तथा न्याय करने के लिये कभी किसीसे भी रिश्वत नहीं लेता तथा किसी के सामने रिश्वत के लिये हाथ नही फैलाता वह न्यायाधीश धन्य है धन्य है ।।।२०।।

सो राजा फिर धिन्न हे ।। बूझे ग्यान विचार ।।
षट द्रसण सुखराम क्हे ।। पूजर पकडे सार ।।२१।।

जो राजा संतोसे त्रिगुणी मायाके परेका सतस्वरुप का ग्यान पुछ्ता व धारण करता वह राजा धन्य है धन्य है । तथा जो राजा जोगी,जंगम,सेवडा,सन्यासी,फकीर,ब्राम्हण इन छः दर्शनीयोको सतस्वरुप ग्यान खोजनेके लिये पुजता व उनके ग्यानसे सार रुपमे पाया हुआ सतस्वरुप ग्यान सतगुरु से धारण करता वह राजा धन्य है धन्य है ।।।२१।।

सो म्हाजन सुण धिन्न हे ।। घट तो देह न कोय ।।
ले बाधीन सुखराम क्हे ।। ले नही तोले लोय ।।२२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो बेपारी अपना माल बेचने वक्त मालका पुरा भाव लेता व माल तोलके देते वक्त कम देता व खरेदी करते वक्त भाव कम देता व ज्यादा माल तोल लेता वह बेपारी निच है । व जो बेपारी माल बेचते वक्त व माल खरेदी करते वक्त जरासाभी हेरफार नही करता वह बेपारी धन्य है धन्य है ।।।२२।।

सो म्हेरी सुंण धिन हे ।। जे पत ब्रता होय ।।
नर धिन सो सुखराम क्हे ।। जे हरी रत्ता ज्योय ।।२३।।

जो पत्नी प्रतिव्रता है तथा अपने पतीको किसी प्रकार का धोका नही करती वह पत्नी धन्य है धन्य है व जो पती शिलवान है व हरीमे रच मचा है नितीसे संसार कर कर रामजी के स्मरण मे लीन है वह पती धन्य है धन्य है ।।।२३।।

धिन सो वे ही जाणी ये ।। जे रत्ता रे माण ।।
दूजा सबी सुखराम क्हे ।। नेहचे झूठ बखाण ।।२४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जो नर नारी रहीमान याने रामजी में लिन होकर रहीमान याने रामजीका स्मरण करते है वे नर नारी धन्य है धन्य है । रहीमान याने रामजीको त्यागकर अन्य देवताओके भक्तीयो मे लिन है वे सभी निश्चित ही कालग्राभी है मतलब स्वयंम् को कालसे मुक्त करानेमे झुठे है असफल है ।।।२४।।

धिन धिन ब्राम्हण धिन्न हे ।। हर ही सूं राता ।।
साधू धिन सुखराम क्हे ।। जाचण नही जाता ।।२५।।

जो ब्राम्हण रातदिन हर याने सतस्वरुप ब्रम्ह मे मस्त है लिन है वह धन्य है धन्य है । तथा जो गृहस्थी साधु जो किसीके सामने स्वयंम् तथा अपने कुटुंम्ब परिवार के लिये हाथ नही पसारता व मेहनत कष्ट करके अपना संसार चलाता वह गृहस्थी साधु धन्य है

धन्य है । तथा वैरागी साधु वह धन्य है जो अपने जरुरत पुरता सत परिवार से माँगता व बेजरुरत का कोई जबरदस्ती से कितना भी देता तो भी नही लेता । वह बैरागी साधु धन्य है धन्य है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२५।।

छत्री सोई धिन हे ।। बो खीम्यां कर जाय ।।
षट दरसण सुण साद सूं ।। निव चाले जुग मांय ।।२६।।

क्षत्रिय याने अनिती के विरोधमे लढणेवाला लढवय्या जो क्षमा स्वभावका है वह धन्य है याने जो क्षत्रिय बेकारण की छोटी मोठी लढाईयाँ मे हिस्सा नही लेता बरदास्त होवे जबतक कितना भी तलकीफ हुओी तो भी लढाई झगडा नही करता व नही होने देता । अपनी गलती न होते हुओे भी व अपना देह का बल जादा होते हुये भी झगडा तंटा नही होवे इसलीये गलती खुदपे ले लेता वह क्षत्रिय धन्य है धन्य है । तथा जो छ:दर्शनोसे व संत साधुओसे ग्यान सार समजने के लिये नम्र रहता वह क्षत्रिय धन्य है धन्य है ।।।२६।।

सुभ सुभ बाताँ जे करे ।। सो सब ही धिन होय ।।
पण साचा धिन सुखराम क्हे ।। जे हरी रत्ता जोय ।।२७।।

जो नर नारी सतस्वरुप देशमे पहुँचाने वाली शुभ शुभ बाता करते वे सभी नर–नारी धन्य है धन्य है तथा सतस्वरुप के शुभ शुभ कर्म के साथ हरी मे रचे मचे है व रातदिन हरीका स्मरण करते है वे शुभ शुभ कर्म करनेवालोसे अधिक धन्य है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२७।।

वा जागां ही धिन हे ।। ज्याहां हर चरचा होय ।।
जे रत्ता हरी नांव सुं ।। तिण सम अवरन कोय ।।२८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जहाँ सतस्वरुप रामजीकी चर्चा चलती है वह घर धन्य है वह जगह धन्य है वह गॉव शहर धन्य है । परंन्तु जिस घर के लोग या गॉव शहर के लोग रामजी के स्मरण मे लगे है वे घरके गॉव के शहर के अन्य लोगोसे महान है उनके समान उनके घरमें गॉवमें या शहरमें कोई भी नर नारी नही हैं ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२८।।

धिन धिन वे नर जुग मे ।। राम स्नेही नाम ।।
फिर धिन सो सुखराम क्हे ।। वा बस्ती वो गाँम ।।२९।।

जगतमे रामस्नेही व कर्मस्नेही रहते । रामस्नेही याने कर्म से उबरे हुये व महासुखमे समाये हुये नर नारी होते है तो कर्मस्नेही ये काल के जबडे मे गहरे अटके हुये नर नारी होते है । रामस्नेही कालके मुखमे अटके हुये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती,अवतार,दुर्गा,मुम्बा,अंबा,भेरु , भोपा,पितर,आदिकी भक्ती त्यागते व ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती काल से मुक्त होनेके लिये जीस सतस्वरुप रामजीकी भक्ती करते वह भक्ती धारण करते व कर्मस्नेही ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ती जीस रामजीकी भक्ती करते वह त्यागते व काल के मुखमे

जखड्बंद हुअे वे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती अवतार,दुर्गा,मुम्बा,अंबा,भेरु,भोपा,पितर आदि की भक्ती करते । ऐसे रामजीकी भक्तीको भक्ती करनेवालोको ब्रम्हा,विष्णु,महादेव, शक्ती,देवी देवता तथा जगत के सभी नर नारी रामस्नेही नामसे जाणते ऐसे सभी रामस्नेही धन्य है धन्य है । ऐसे रामस्नेही जीस बस्तीमे या गाँवमे रहते उस बस्ती तथा गाँव को रामस्नेहीयोकी बस्ती तथा रामस्नेही–योका गाँव करके जगत जाणते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसी बस्ती व गाँव को धन्य है धन्य है ।।।२९।।

रामस्नेही बाजीया ।। प्रगटिया जुग मांय ।।
सो धिन हे सुखराम क्हे ।। मुख देखीजे जाय ।।३०।।

जो मनुष्य रामस्नेही करके जगत मे प्रगटता ऐसे मनुष्य धन्य है धन्य है । ऐसे रामस्नेही बाजनेवाले नर नारी का मुख याने दर्शन संसार के सभी नर नारीयो ने लेना चाहिये ऐसे रामस्नेही के दर्शन करनेसे दर्शन लेनेवाला धन्य होता है ।।।३०।।

सत्तगुर की सेवा करे ।। लेवे निर्गुण नाँव ।।
सो धिन्न हे सुखराम के ।। सुण ज्योरे सब गाँव ।।३१।।

जो मनुष्य सतगुरु की सेवा करते है याने सतगुरु ने बताया हुआ निरगुण नाम लेते है मतलब जिस माया के नामसे निरगुण शब्द मुखसे न बोले जानेवाला नाम घटमे प्रगट होता है ऐसा नाम जपनेवाले नर नारी धन्य है यह सभी गाँववाले तथा शहरवाले सुणो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३१।।

धिन धिन हर की भक्त हे ।। धिन जो करे ऊचार ।।
धिन धिन सो सुखराम के ।। केवल ब्रम्ह बिचार ।।३२।।

जगतमे काल से छुडानेवाली सतस्वरुप हर की भक्ती धन्य है धन्य है । ऐसे हर के भक्ती का जो नर नारी उच्चारण करते है वे सभी नर नारी धन्य है धन्य है । जो नर नारी माया व व कालके परेके केवल ब्रम्ह की भक्ती करते है वे सभी धन्य है धन्य है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३२।।

धिन धिन सोई जाणीये ।। जो शिंवरे निज नांव ।।
ता सूं धिन सुखराम कहे ।। जो पहुँता ऊण गाँव ।।३३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जो निजनाम याने हंस के साथ आदिसे लेकर अंत तक जो परमात्मा रमता है उसका नाम भजते है वे नर नारी धन्य है धन्य है । तथा ऐसा निजनाम जपकर परमात्मा के महासुख के गाँव पहुँचते है वे सभी नर–नारी धन्य है धन्य है । ।।३३।।

पूरब घाटे ऊतऱ्या ।। पिछम दिसा चड जाय ।।
सुखिया धिन धिन जुग मे ।। बेठा निज घर माय ।।३४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो हंस पुर्व के छःकमळ उतरकर पश्चिम

के छःकमळ छेद्कर दसवेद्वार मे चढते है व दसवेद्वार मे माया व कालके परेके निजघर जहाँसे आदिमे माया में आये थे ऐसे निजघर पहुँचकर बैठते है वे सभी नर नारी इस जगतमें धन्य है धन्य है ।।।३४।।

तिर्वेणी के ऊपरे ।। नव घर लंघे कोय ।।
सो नर जुग मे धिन हे ।। वा सम अवरन होय ।।३५।।

जो नर नारी गंगा,यमुना,सरस्वती,इन तीनो नदियोके संगम के परे नौ घर मे के तेरा लोक महामाया,प्रकृती,ज्योती,अजर,आनंद,वजर,इखर,अनहद,निरंजन,निराकार,शिवब्रम्ह,महाशुन्य, पारब्रम्ह लांघते है व सतस्वरुप के देश पहुँचते है ये सभी नर,नारी धन्य है धन्य है । इन नर नारीयोके समान जगतमें कोई भी नरनारी नही होती है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३५।।

त्रिबेणी नेणा बिचे ।। प्रगट केऊँ बजाय ।।
जन सुखदेवजी पोथियां ।। सत्त गुर सोगन खाय ।।३६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर नारीयोको ग्यानी ध्यानीयोको कहते है कि,मै सतगुरु की कसम खाकर कहता हुँ की मै सतगुरु के प्रतापसे घटमे नैनो के बिच जो गंगा यमुना सुषमना का त्रिवेणी संगम का घाट है वहाॅ पहुँचा हुँ यह प्रगट व बजा बजाकर कह रहा हुँ यह जगतके सभी नर नारी ग्यानी ध्यानी सुनो ।।।३६।।

।। इति धिन धिनता के अंग का भाषांतर संपूर्ण ।।